भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 4 | **सितम्बर** 2003 | **अंक** 9

जीवंत पुस्तकालय

सुसज्जित पुस्तकालय किसी भी समाज का आईना होता है। अच्छे अध्ययन केन्द्रों, पुस्तकालयों में अच्छी पुस्तकों के अध्ययन को बढ़ावा मिलने से संस्कार का सृजन होता हे और नए समाज की रचना होती है।

युवाओं का ध्यान पुस्तकों की ओर कम फैशन की ओर ज्यादा है। यह उचित तो नहीं कहा जा सकता। जीवंत पुस्तकालय की महत्ता भी है। अच्छी पुस्तकों के साथ विद्वानों को बुलाकर व्याख्यान कराए जाएं और समाज के लोग इस ओर आकर्षित हों।

— आचार्य विष्णुकांत शास्त्री
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राजस्थान में महात्मा गाँधी सार्वजनिक पुस्तकालय

राजस्थान के 9 जिलों के 4173 ग्राम पंचायतों में 10 जुलाई 2003 को महात्मा गाँधी सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थापना की गई है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने पुस्तकालयों का आकस्मिक निरीक्षण किया जिसमें कुछ पुस्तकालयों की व्यवस्था पर असंतोष व्यक्त किया। स्वतंत्रता के बाद कितने प्रदेशों में इस प्रकार के पुस्तकालयों की स्थापना की गई किन्तु पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत नहीं की जा सकी। यही कारण है कि देश में पुस्तक पढ़ने वाले पाठकों और स्वाध्याय कर्मियों का विकास नहीं हो सका। साक्षरता के विकास में भी पुस्तकालयों का महत्त्वपूर्ण योगदान हो सकता है। पुस्तकालय योजना को सजीव बनाकर जन-जन से जोड़ने की आवश्यकता है। राशि स्वीकृत कर पुस्तकालय स्थापित कर देने मात्र से इसकी सार्थकता नहीं होगी।

पुस्तकालय सबसे अच्छे दोस्त

पुस्तकालय इंसान पैदा करने का कारखाना है। पुस्तकालय अलाव के समान है जो रोशनी के साथ ही गर्मी देते हुए सामाजिकता का माहौल पैदा करते हैं।

रचना प्रक्रिया के दौरान लेखक के सामने कोई धर्म या जाति नहीं होती उसे सिर्फ इन्सान दिखाई देता है। कागज और शब्दों के बीच में एक इन्सान का जन्म होता है, पुस्तकालय सबसे अच्छे दोस्त हो सकते हैं।

— काशीनाथ सिंह

पुस्तक, पुस्तकालय, पाठक

आज देश में प्राथमिक स्तर से शिक्षा के प्रसार का प्रयास हो रहा है, किन्तु उस शिक्षा को सार्थक बनाने की योजना नहीं है। गाँव-गाँव को टेलीविजन सेट सुलभ कराये जा रहे हैं, टेलीफोन घर-घर में पहुँचाने का प्रयास हो रहा है, किन्तु पुस्तकें जो ज्ञान की माध्यम हैं, उनको पहुँचाने का कोई कार्यक्रम नहीं है। कस्बों और गाँवों में जहाँ लोगों के पास समय होता है, उन तक पुस्तकें पहुँच सकें तो उनमें रचनात्मक सोच जागृत हो। यह तभी सम्भव है जब प्रत्येक कस्बे, गाँव में पुस्तकालय हों, साहित्य चर्चा के लिए स्थान हो। शहर महानगर बनते जा रहे हैं, नगरों के विस्तार से दूर-दूर तक कालोनियाँ, शिक्षा संस्थाएँ, बाजार बनते जा रहे हैं, इन नगरों की भौतिक सुविधा के लिए योजना बनती है किन्तु उनके मानसिक विकास के साधन सुलभ कराने की कोई योजना नहीं बनती। कालोनी में मन्दिर बन जायँगे, पर पुस्तकालय जो ज्ञान-मन्दिर है उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता।

सरकार कहती है वर्ष में राज्यों तथा राजा राममोहनराय फाउण्डेशन के माध्यम से पुस्तकालयों और पुस्तकों पर भारी धनराशि व्यय की जाती है। वह राशि किस रूप में व्यय होती है, आर्थिक वर्ष का समापन निकट आया और थोक भाव में पुस्तकें खरीद ली गईं, इस खरीद में पुस्तक की गुणवत्ता नहीं, प्रकाशक की राजनीतिक-प्रशासनिक पहुँच अधिकाधिक सुविधा शुल्क का आकर्षण यही पुस्तक खरीद का मापदण्ड होता है। कितने प्रकाशक इसी उद्देश्य से पुस्तकें प्रकाशित करते हैं।

पुस्तकालयों के लिए प्रत्येक प्रदेश में एक अलग पुस्तकालय प्रकोष्ठ (सचिवालय) होना चाहिए जो सतत रूप से सक्रिय रहे। विभाग प्रकाशकों से पुस्तकें माँगे नहीं, प्रकाशक स्वयं नई पुस्तकें भेजता रहे। प्रति तीन मास पर उनका चयन हो। चयनकर्ता भिन्न-भिन्न हों जिनकी पुस्तकों में रुचि हो वे ही पुस्तकों का चयन करें। उस प्रकोष्ठ के अन्तर्गत गाँव-गाँव, शहर-शहर में संचालित पुस्तकालय से पाठकों की रुचि माँगनी चाहिए। पाठकों के संवाद आयोजित होने चाहिए। अधिकारी उनका समय-समय पर निरीक्षण करें। कितने पुस्तकालय नाम के हैं, विभाग उन्हें पुस्तकें भिजवाता है वह पाठकों तक पहुँचती नहीं क्योंकि वे पुस्तकालय खुलते ही नहीं हैं। पुस्तकालय के संचालन की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

पुस्तकालय के लिए पुस्तकों का चयन करते समय प्रत्येक वर्ग के पाठकों का ध्यान रखना चाहिए—बालक, किशोर, युवा, प्रौढ़, स्त्री-पुरुष ताकि सभी को अपनी रुचि की पुस्तकें प्राप्त हो सके। इससे पुस्तकालय जीवन्त बने रहेंगे।

केन्द्रीय पुस्तकालय संगठन से एक मासिक पत्र प्रकाशित होना चाहिए जिसमें नव प्रकाशित पुस्तकों की जानकारी कराई जाय और यह पत्रिका प्रत्येक पुस्तकालय को भेजी जाय। यह पाठकों में पुस्तकों के प्रति जागरूक करेगा, उसकी रुचि और अध्ययनशीलता का विकास होगा। इसमें पाठकों की प्रतिक्रिया प्रकाशित हो, इससे लेखकों का भी दिशा-निर्देश होगा। स्वाध्याय की माध्यम पुस्तकें ही हैं। पुस्तकें अन्तर्निहित प्रतिभा को जागृत करती हैं। आशा में, निराशा में पुस्तकें व्यक्ति का सहारा बनती है, उसे जीवन की हर परिस्थिति से जूझने के लिए शक्ति प्रदान करती है। इस गरीब देश में जहाँ जीवन की आवश्यक वस्तुओं को व्यक्ति नहीं जुटा पाता, वहाँ सार्वजनिक पुस्तकालय ही उसका मार्गदर्शन कर सकते हैं। काश! सरकार इस पर सक्रियतापूर्वक विचार करती। पुस्तकालय को पुस्तक और पाठकों का सेतु बनायें।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

स्मृति-शेष

मैत्रेयी सिंह

13 अगस्त 2003 को अपराह्न दो बजे श्रीमती मैत्रेयी सिंह का लक्ष्मी नर्सिंग होम में हृदय की गति अवरुद्ध होने से स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म 1926 में शाहजहाँपुर में हुआ था। आपकी माता श्रीमती कमला सिंह स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, साहित्यकार एवं समाजसेवी थीं, वे सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की छोटी बहन थीं। आपके पिता डॉ० एच० सिंह लब्धप्रतिष्ठित होमियोपैथ चिकित्सक थे। आपके पति प्रो० दिलीपनारायण सिंह जी उदयप्रताप डिग्री कालेज में राजनीतिशास्त्र के विभागाध्यक्ष, नागरी प्रचारिणी सभा के उपाध्यक्ष, प्रसाद परिषद एवं नागरिक नाटक मण्डली के संस्थापक सदस्य तथा कारमाइकल लाइब्रेरी एसोसिएशन के महामंत्री एवं जनसंघ वाराणसी के संस्थापक सदस्य थे जिनका देहावसान 31 दिसम्बर 1996 को हो गया था। आप स्वयं साहित्यकार, चित्रकार थीं। आपने कई अंग्रेजी उपन्यासों का अनुवाद हिन्दी में नागरी प्रचारिणी सभा के लिये किया था।

आपका शैशव सुप्रसिद्ध साहित्यकार जयशंकरप्रसाद, प्रेमचंद, महाकवि निराला, डॉ० सम्पूर्णानन्द एवं बेढब बनारसी जैसे साहित्यकारों के सान्निध्य में बीता। आपकी माताजी के स्वतंत्रता संग्राम में व्यस्त रहने के कारण बाहर जाते समय आपको एवं आपकी बहनों प्रसिद्ध व्यंग्य लेखक श्री बेढब बनारसी की माताजी के पास छोड़ जाया करती थीं।

आपने सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल, कमच्छा से शिक्षा प्राप्त की थी। आप पढ़ने में अत्यन्त कुशाग्र थीं एवं साहित्यकारों का पूरा प्रभाव आप पर पड़ा था, जिसके कारण अल्पवय में ही छाया, आर्यमहिला जैसी पत्रिकाओं के लिये कहानियाँ लिखनी प्रारम्भ कर दी थी। बाल्यावस्था में ही आपकी प्रखर बुद्धि को देखकर प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसादजी ने आपका नाम दुर्गा से बदलकर मैत्रेयी रख दिया। विश्वविद्यालय प्रकाशन से प्रकाशित 'अंतरंग संस्मरणों में प्रसाद' नामक पुस्तक में प्रकाशित अपने लेख 'प्रसाद मेरी बाल स्मृतियों के झरोखे' में आपने इस बात का उल्लेख किया है। महाकवि निराला आपकी रचनाशीलता से प्रभावित होकर आपको अपनी बेटी जैसा स्नेह देते थे तथा पत्र के माध्यम से अपनी रचनाओं को आपके पास भेजा करते थे और प्रत्येक पत्र में चिरंजीव बेटी का सम्बोधन करना कभी नहीं भूलते थे। आपकी चित्रकला से प्रभावित होकर महाकवि ने आपसे अपना एक ऐसा रेखाचित्र बनाने को कहा जिसमें उनका आधा चेहरा काला था और उसे वे अपने साथ ले गये। बनारस आने पर आपसे मिलना कभी नहीं भूलते थे। वाराणसी प्रवास के समय आपके आवास पर निरालाजी की अध्यक्षता में काव्य गोष्ठी का होना अपरिहार्य था। आपकी मौसेरी बहन सुधा कुमारी का विवाह मुंशी प्रेमचंद के सुपुत्र एवं प्रसिद्ध साहित्यकार अमृतराय से हुआ था।

मुंशी प्रेमचंद अपना इलाज करवाने के लिये आपके पिता डॉ० एच० सिंह के पास आया करते थे। दवाखाने पर ही पहली बार महाकवि जयशंकर प्रसाद एवं उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का प्रथम परिचय हुआ था। दवाखाने से ही पिताजी के साथ प्रात: भ्रमण को प्रसाद, प्रेमचंद एवं बेढब बनारसी बेनियाबाग में जाया करते थे। कभी-कभी डॉ० सम्पूर्णानन्दजी भी उनके साथ हो लिया करते थे। प्रसिद्ध साहित्यकारों की साहित्य चर्चा का जो अमिट प्रभाव आपके बालमन पर पड़ा वह जीवन के अन्तिम क्षणों तक साथ रहा। इस तरह इन समस्त साहित्यकारों के विषय में आपके पास स्मृतियों की अमूल्य निधि सुरक्षित थी जिसे निधन के पूर्व आप एक आत्मकथा संस्मरण में लेखनबद्ध करने में व्यस्त थीं।

आप अपने पीछे छ: पुत्रों एवं एक पुत्री का भरा-पूरा परिवार छोड़ गयी हैं।

प्रसाद युग की अन्तिम कड़ी लुप्त हो गयी।

नागेश मेहता

मध्यप्रदेश में मालवा अंचल के प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार नागेश मेहता का 7 जुलाई 2003 को निधन हो गया। वे 79 वर्ष के थे और कुछ महीनों से अस्वस्थ थे। नीमच में 13 अक्टूबर 1924 को जन्मे श्री मेहता का साहित्यक जीवन सुदीर्घ रहा। उनके द्वारा लिखी कविताओं और कहानियों का प्रदेश और देश के प्रमुख समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन होता रहा। डॉ० मंगल मेहता के साथ मिलकर लिखे गये उनके उपन्यास 'सरपंच' पर टेलीफिल्म का भी निर्माण हुआ।

क्रांति के कवि सुभाष मुखोपाध्याय

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के बाद बांग्ला के सबसे अद्‌भुत कवि सुभाषा मुखोपाध्याय का मंगलवार, 8 जुलाई 2003 को लम्बी बीमारी के बाद कोलकाता में निधन हो गया। 84 वर्षीय मुखोपाध्याय की पत्नी भी बीमार हैं और इन दिनों अस्पताल में भरती हैं। सुभाष मुखोपाध्याय हमेशा गलत व्यवस्था का विरोध करते रहे। उनकी कविताएँ आम आदमी की व्यथा और दशा को बराबर प्रतिबिम्बित करती रहीं। उन्हें ज्ञानपीठ और पद्‌मभूषण से सम्मानित किया जा चुका था।

एक दिन जब मैं सो रही थी, प्रसादजी मेरे घर आए। मेरी बड़ी बहन सावित्री, जिन्हें मैं दीदी कहती थी, आयीं, और मुझे जगा कर बोलीं, खूखी (मेरा घर का नाम) प्रसादजी तुम्हारा दुर्गा नाम बदलना चाहते हैं। यदि तुमसे पूछा जाय तो तुम मना कर देना। थोड़ी देर बाद मेरी नीचे बुलाहट हुई। पिताजी के पास दूसरी कुर्सी पर प्रसादजी बैठे थे। वे मुझे अपने पास बुलाकर कमर में हाथ डाल कर ठुड्डी पकड़ कर बोले, ''खूखी, तुम्हारा दुर्गा नाम तुम्हारी बड़ी बहनों के नाम से मेल नहीं खाता। अगर तुम्हारा नाम सावित्री, गायत्री से मेल खाता मैत्रेयी रख दूँ तो तुम्हें स्वीकार होगा?''

मेरी कमर में हाथ डाल कर बड़े प्यार से मेरी ठुड्डी पकड़ कर वे मुझसे यह आग्रह कर रहे थे। उनकी मुद्रा और उनके प्यार के आगे मैं झुक गई तथा उसी अन्दाज में मैंने कहा—''आप मेरा जो नाम रखेंगे, वह मुझे स्वीकार होगा।''

प्रसादजी और बाबूजी दोनों मुस्करा पड़े। उसके बाद स्कूल में पत्र लिख कर बदले हुए नाम की सूचना दे दी गई। उसी दिन से स्कूल के रजिस्टर से दुर्गा नाम हटा कर मैत्रेयी नाम चढ़ा दिया गया। आज मैं गर्व का अनुभव करती हूँ कि इतने बड़े महापुरुष ने मेरा नामकरण किया।

उस समय लड़कियों को स्कूल में सात या आठ वर्ष की उम्र में फ्राक पहन कर जाना मना था। अतएव दीदी की अवस्था अब साड़ी पहनने की हो गई थी। हमारे घर में छज्जा था, जो नीचे बरामदे के ठीक ऊपर था। अक्सर हम लोग छज्जे पर खड़े हो जाते थे। प्रसादजी का इक्का, जिस पर वे दुकान जाते थे, घर के सामने से ही निकलता था। वे मेरे घर की तरफ देखते थे। यदि हममें से कोई दिख गया तो बड़ी-सी जीभ निकाल कर चिढ़ाना उनकी नित्य की आदत में शामिल हो गया। हम भी अक्सर उनको देखने के निमित्त वहाँ खड़े हो जाते। एक दिन उन्होंने जीभ निकाल कर चिढ़ाया तो वे साड़ी पहने दीदी के धोखे में थे। परन्तु हममें से कोई न हो कर माँ निकल गईं। तब से उनका जीभ निकाल कर चिढ़ाना छूट गया।

एक बार मैं प्रसादजी से नाराज हो गई। जब भी प्रसादजी नीचे आते, मैं नीचे नहीं जाती। दो-चार दिन बाद उन्हें आभास हुआ तो बाबूजी से बोले—''खूखी कहाँ गई? दिखती नहीं।''

बाबूजी ने कहा—''वह आपसे रूठी है।''

प्रसादजी की आदत थी कि वे बच्चों को चिढ़ाते थे और तंग भी कर देते थे। उन्होंने मेरी पीठ पर चिकोटी काट दी थी और मैं उनसे रूठ गई थी। नीचे से बाबूजी ने मुझे आवाज दी। जब मैं उनके पास गयी तब प्रसादजी वहाँ बैठे मिले। उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर अपने पास खींच लिया और मेरी दोनों चोटियों को पकड़ कर ठुड्डी से मिला कर बोले—''अरे खूखी, तुम्हें तो दाढ़ी निकल आई है।'' सब लोग हँस पड़े। मैं भी हँस पड़ी तथा रूठना खतम हो गया। **—मैत्रेयी सिंह**

अंतरंग संस्मरणों में 'प्रसाद' सम्पाद. : पुरुषोत्तमदास मोदी

प्रोफेसर राजाराम मेहरोत्रा

अंग्रेजी साहित्य के पारंगत पारखी, वाराणसी के अतीत और वर्तमान के सुलेखक, वाराणसी के दलालों की कूटभाषा के कोशकार, मधुर स्वभाव के प्रतीक, विनयशील प्रो० राजाराम मेहरोत्रा का 67 वर्ष की आयु में 16 जुलाई 2003 को वाराणसी में शरीरान्त हो गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभागाध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपने छात्रों के बीच वैदुष्य और चरित्र की जो छाप छोड़ी है, आज भी

चर्चा का विषय है। काशी के गौमठ मुहल्ले के सामान्य परिवार में 10 जनवरी 1936 ई० में जन्मे प्रोफेसर मेहरोत्रा ने, जब वे स्कूल के छात्र थे, पत्र-पत्रिकाओं में लिखना शुरू कर दिया था। अंग्रेजी साहित्य पर उनके कई ग्रन्थ अमेरिका और लन्दन में छपे, किन्तु हिन्दी से उनका अनन्य अनुराग रहा है। भाषाविज्ञान के सुचिन्तक मनीषी प्रो० मेहरोत्रा 1989 ई० में नार्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग के कुलपति नियुक्त हुए। वहाँ उन्होंने अपनी विद्वता और प्रशासन-कुशलता से विश्वविद्यालय को स्तरीय प्रतिष्ठा दिलायी। वे अंग्रेज कवि लांगफेलो के अतिशय प्रशंसक थे। वे प्राय: उस कवि की एक कविता का यह अंश दुहराया करते थे कि 'जीवन शाश्वत सत्य है, मजार उसका पड़ाव नहीं'

प्रोफेसर मेहरोत्रा ब्रिटेन के 'रायल सोसायटी ऑफ लेटरेचर', लन्दन के इंस्टीट्यूट ऑफ लिंगविस्टिक जैसी कई सुनामधन्य संस्थानों के सदस्य रहे हैं। उन्होंने यूरोप के एक दर्जन देशों में साहित्य के भिन्न-भिन्न विषयों पर विचार-गोष्ठियों में भाग लिया था। जापान में उनका विद्वतापूर्ण भाषण सुनकर वहाँ के सम्राट ने उनका सम्मान किया था। ऐसे सारस्वत साधक के बिछुड़ने से शोकाकुल होना स्वाभाविक है।

पं० कृष्णवल्लभ द्विवेदी

प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं कवि 80 वर्षीय पं० कृष्णवल्लभ द्विवेदी का रविवार, 3 अगस्त को इलाहाबाद में निधन हो गया। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० जी०के० मेहता के श्वसुर थे।

स्व० रामस्वरूप चतुर्वेदी

रामस्वरूप चतुर्वेदी हिन्दी के उन गिने-चुने आलोचकों में से थे जिन्होंने 'हिन्दी-नवलेखन' को न केवल रेखांकित किया बल्कि 'नयी रचनाशीलता' को प्रोत्साहित भी किया। 'नयी कविता' और 'कख ग' जैसी ऐतिहासिक पत्रिकाओं का सम्पादन कर उन्होंने नये साहित्य का तर्कशास्त्र गढ़ा था। 'परिमल' संस्था के वह सक्रिय सदस्यों में से थे। उनके अध्ययन का क्षेत्र बहुत विस्तृत था। उनकी संवेदनशीलता सीमाबद्ध नहीं थी। शरत् के 'कथा-साहित्य' ने उन्हें इतना अधिक आन्दोलित किया कि उन्होंने 'शरत् के नारी-पात्र' पुस्तक का सृजन किया और तब तक विष्णु प्रभाकर की 'आवारा मसीहा' किताब नहीं आ पाई थी।

हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में 'कामायनी का पुनर्मूल्यांकन' लिखकर चतुर्वेदीजी ने जयशंकर 'प्रसाद' के कवि-कर्म को न केवल एक नूतन दृष्टि से देखा बल्कि 'मुक्तिबोध' की पुस्तक 'कामायनी : एक पुनर्विचार' की सम्यक् आलोचना भी प्रस्तुत की। लेकिन चतुर्वेदीजी के प्रिय साहित्यकार 'अज्ञेय' थे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनकी किताब 'अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या' 'अज्ञेय' को समझने की एक बेहद समझदार कोशिश है।

हिन्दी आलोचना को चतुर्वेदीजी का सबसे बड़ा योगदान काव्य-भाषा के क्षेत्र में है। इस अछूत विषय को उन्होंने चुना और उनके काव्य-भाषा सम्बन्धी अध्ययन का परिणाम है उनकी 'भाषा और संवेदना' एवं 'मध्यकालीन हिन्दी काव्य-भाषा' पुस्तकें। अत्युक्ति न होगी कि यदि यह कहा जाए कि काव्यभाषा सम्बन्धी चतुर्वेदीजी का यह चिंतन हिन्दी में दुर्लभ और अनूठा है।

किसी भी बड़े आलोचक की तरह चतुर्वेदीजी ने भी साहित्य का इतिहास लिखा और कहना न होगा कि इस क्षेत्र में उनका ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' एक नयी दिशा का सूत्रपात करता है। साहित्य और संस्कृति के सवालों पर वह बड़े मुक्त ढंग से सोचते रहते थे और उस चिन्तन को बड़े सुव्यवस्थित ढंग से उनकी पुस्तक 'भारत और पश्चिम : संस्कृति के अस्थिर सन्दर्भ' में प्रस्तुत किया गया है।

रामस्वरूप चतुर्वेदी का जाना हिन्दी-आलोचना के एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ का ढह जाना तो है ही साथ ही आज के अपसंस्कृति के दौर में उनके भद्र और शालीन व्यक्तित्व की याद भी बार-बार आती रहेगी।

—प्रोफेसर कुमार पंकज
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पठनीय पत्रिकाएँ

रंगायन
(जनवरी-दिसम्बर 2002)
सम्पादक : पीयूष दईया
भारती आलोक कला मण्डल, उदयपुर

रंग प्रसंग
(जुलाई-दिसम्बर 2003)
ब०व० कारंत स्मृति अंक
सम्पादक : प्रयाग शुक्ल
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड
नई दिल्ली

बहुवचन
(अप्रैल-जून 2002)
सम्पादक : प्रभात रंजन
महात्मा गाँधी अन्तरर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-29

मैथिली भाषा

उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने दरभंगा में आकाशवाणी पर पाँच मिनट की बुलेटिन का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री अटलविहारी वाजपेयी के आश्वासनानुसार मैथिली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किया जायगा।

वेबसाइट और पुस्तकें

यूरोप तथा अमेरिका में प्रमुख प्रकाशकों की वेबसाइट हैं जिन्हें देखकर पाठक पुस्तकों का चयन करते हैं और उन्हें प्रकाशक से सीधे अथवा पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करते हैं। इन वेबसाइट पर पुस्तक का परिचय, लेखक का परिचय, पुस्तक की प्रमुख समीक्षा सभी उपलब्ध होती है। इससे पाठकों को प्रकाशित पुस्तकों की ही नहीं प्रकाशन पूर्व पुस्तकों की जानकारी भी होती है। इस दिशा में हमारा देश बहुत पीछे है। अभी तो हमारी युवा पीढ़ी टी०वी० पर कौतूहल, कथा, कहानी, अपराध, सिनेचित्र, फैशन आदि देखने में लगी है, उसे पुस्तकों के प्रति कोई रुचि नहीं है। आज समाचार के कितने चैनल हैं, वे फिल्मों, अभिनेता-अभिनेत्रियों, खेल आदि के दृश्य व समाचार बड़े उत्साह से दिखाते हैं किन्तु बौद्धिक जगत के समाचार और उनकी कृतियों की चर्चा नहीं होती। साहित्य-संस्कृति से शून्य, पीढ़ी का भविष्य क्या होगा?

सरकार को टी०वी० चैनलों को लेखक, लेखन और पुस्तकों पर भी कार्यक्रम देने के लिए बाध्य करना चाहिए, तभी बौद्धिक शून्यता समाप्त होगी और देश में पढ़ने-लिखने की प्रवृत्ति बढ़ेगी और बौद्धिकता का विकास होगा।

प्रगति मैदान में स्थायी पुस्तक पैवेलियन

दिल्ली के प्रगति मैदान में एक स्थायी पुस्तक पैवेलियन निर्माण की योजना है। भारतीय व्यापार संवर्धन संघटन के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक जे० वासुदेव के अनुसार प्रगति मैदान को आधुनिक बनाने के लिए वास्तुकार की नियुक्ति की गई है। वास्तुकार की रिपोर्ट आने पर पुस्तकों के लिए एक स्थायी पैवेलियन बनाया जायगा, जिसमें सभी भारतीय भाषाओं की पुस्तकें पढ़ने और बिकने के लिए उपलब्ध होंगी। 15 हजार वर्गमीटर में आयोजित किये जानेवाले पुस्तक मेले में 300 प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता 575 स्टालों में अपनी पुस्तकों का प्रदर्शन करेंगे। इनमें हिन्दी के लगभग 100 प्रकाशक होंगे। इस स्थायी पुस्तक पैवेलियन में समय-समय पर पुस्तकों से सम्बन्धित विषेषकर हिन्दी पुस्तकों की पठनीयता में कमी पर चर्चा होगी।

पठनीय पुस्तकें

देश सेवा के अखाड़े में	*सूर्यबाला*	150.00
जीवन अज्ञात का गणित है	*विवेकी राय*	200.00

पुरस्कार-सम्मान

कलाम द्वारा 22 विद्वानों को सम्मान प्रमाणपत्र

राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने संस्कृत, पाली, प्राकृत, अरबी, फारसी भाषा के 22 विद्वानों को शनिवार को सम्मान प्रमाणपत्र दिये।

संस्कृत भाषा के विद्वानों में डॉ० एम० श्रीमननारायणमूर्ति, किशोरनाथ झा, डॉ० आर०एन० अरलिकट्टी और देवराजन मुखर्जी शामिल हैं। पाली और प्राकृत भाषा के लिये एकमात्र सम्मान दीपककुमार को मिला जबकि अरबी भाषा के तीन विद्वानों को सम्मानित किया गया है। इसके अलावा संस्कृत के पाँच, पाली तथा प्राकृत में एक और फारसी के एक विद्वान को महर्षि बद्रनारायण व्यास सम्मान से अलंकृत किया गया है।

विष्णु प्रभाकर को परम्परा विशिष्ट सम्मान

साहित्यिक संस्था 'परम्परा' ने 8 अगस्त 2003 को अपनी वार्षिक साहित्य संध्या के अवसर पर 92 वर्षीय वयोवृद्ध साहित्यकार **विष्णु प्रभाकर** को परम्परा विशिष्ट सम्मान प्रदान किया। सम्मान स्वरूप प्रशस्ति पत्र के साथ 51,000 रुपये प्रदान किये गये। इसी अवसर पर कैलाश गौतम को ऋतुराज सम्मान प्रदान किया गया।

हिन्दी अकादमी, दिल्ली के वर्ष 2003-2004 के पुरस्कार

शलाका सम्मान

हिन्दी अकादमी का सर्वोच्च शलाका सम्मान प्रख्यात साहित्यकार **राजेन्द्र यादव** को दिया जायगा। सम्मान स्वरूप उन्हें एक लाख ग्यारह हजार ग्यारह रुपये नकद, शाल, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न दिये जायँगे। यह सम्मान राशि श्री यादव 'हंस' के लिए प्राप्त करेंगे, परन्तु अकादमी यादव को उनके लेखन के लिए ही यह पुरस्कार दे रही है।

साहित्यकार सम्मान

हिन्दी भाषा और साहित्य तथा पत्रकारिता की विशिष्ट सेवा के लिए साहित्यकार सम्मान स्वरूप 21,000 रुपये नकद, शाल, प्रशस्ति पत्र तथा प्रतीक चिह्न ग्यारह साहित्यकारों—**सर्वश्री प्रो० चमनलाल सप्रू, डॉ० बलदेव वंशी, डॉ० हरदयाल, डॉ० दिविक रमेश, उपेन्द्रकुमार, सुरेन्द्र तिवारी, बलराम, भगवतीप्रसाद निदारिया, डॉ० सतीश अग्रवाल, भगवानदास मोरवाल तथा श्रीमती अलका सक्सेना** को दिया जायगा। फोटो पत्रकारिता के लिए **श्री वीरेन्द्रकुमार** को सम्मानित किया जायगा।

अन्य पुरस्कार

काकाहाथरसी पुरस्कार (21,000 रुपये) व्यंग्यकार तथा हास्य कवि **श्री सत्यपाल नांगिया** को।

वर्ष 2002-2003 के साहित्य कृति पुरस्कार इक्कीस हजार

डॉ० बलजीत एवं प्रो० पी०सी० जैन—कृष्ण राग से विराग तक, श्री राजेन्द्र अवस्थी—बहता हुआ पानी, श्री राजनारायण बिसारिया—कुछ देह, कुछ विदेह, सुश्री मीरा सीकरी—बलात्कार एवं अन्य कहानियाँ, श्री सुरेन्द्रनाथ सिंह—कालजयी प्रसाद, रामकुमार कृषक—लौट आएँगी आँखें, श्री सुभाष सेतिया—अपने समयक आईना, श्री मधुसूदन आनन्द—बचपन, डॉ० ओमप्रकाश जमलोकी—आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, श्री हेमंत कुकरेती—नया बस्ता, सुश्री मनीषा—हम सभ्य औरतें, श्री गौरीनाथ—नाव के बाहर।

इनके अतिरिक्त 11,000 और 5,100 के साहित्यिक कृति तथा बाल एवं किशोर साहित्य सम्मान योजनाओं के अन्तर्गत क्रमशः 11,000 तथा 5,000 के पुरस्कार दिये जायँगे।

6 सितम्बर 2003 को फिक्की सभागार दिल्ली में पुरस्कार तथा सम्मान प्रदान करने की घोषणा है।

विक्रम सेठ को 10 करोड़ अग्रिम

'सूटेबल बॉय' जैसे बेजोड़ उपन्यास के लेखक विक्रम सेठ को उनके अपने एक करीबी सम्बन्धी और उनकी पत्नी पर लिखे संस्मरणों की किताब पर टाइम वार्नर प्रकाशन की तरफ से लगभग 10 करोड़ रुपये अग्रिम ही दिये जा रहे हैं। इस संस्मरण की किताब का नाम है 'टू लाइव्स'। अभी हाल ही में सेठ के चर्चित उपन्यास 'ए सूटेबल बॉय' को बीबीसी ने 100 महानतम उपन्यास में से एक माना है।

कुछ छोटे पुरस्कार तो सचमुच रचनात्मक होते हैं क्योंकि वे युवा रचनाकारों को दिए जाते हैं जो ताजगी एवं उत्साह से भरे होते हैं, बहुत प्रसिद्ध भी नहीं होते। इसलिए छोटे पुरस्कार अपेक्षाकृत ज्यादा विश्वसनीय होते हैं। बड़े पुरस्कारों के पीछे भयंकर राजनीति होती है तथा वे कई तत्वों द्वारा प्रभावित होते हैं, जैसे—जोड़-तोड़, सम्बन्ध, किसी को एहसानमंद बनाना, किसी पार्टी विशेष का आदमी होना आदि। इसीलिए मैं इन पुरस्कारों के खिलाफ हूँ। दूसरी बात यह है कि ये पुरस्कार उन्हें बड़ी उम्र में दिए जाते हैं, जब उनकी रचनात्मक क्षमता समाप्त हो चुकी होती है। ये पुरस्कार रचना में सहयोग के लिए नहीं बल्कि चुने हुए रचनाकार को सांत्वना के लिए दिए जाते हैं। जब 70 की उम्र में पुरस्कार दिए जाएँगे तो इसका अर्थ यही हुआ कि यह थके हुए आदमी को दी जाने वाली दया राशि है। **— राजेन्द्र यादव**

जन्मदिन, त्योहार तथा विशिष्ट अवसरों पर पुस्तकें उपहार में दें। पुस्तकें अवसर को स्मरणीय बनाती हैं।

यह है उ०प्र० हिन्दी संस्थान

साहित्य, कला, संस्कृति के क्षेत्र में अग्रणी उत्तर प्रदेश देश के प्रमुख साहित्यकारों की जन्मभूमि, कर्मभूमि रही है—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीरप्रसाद द्विवेदी, जयशङ्करप्रसाद, प्रेमचंद, रामचन्द्र शुक्ल, हरिऔध, हजारीप्रसाद द्विवेदी, शिवप्रसाद सिंह, पंत, निराला, महादेवी, पुरुषोत्तमदास टण्डन, सम्पूर्णानंद। आज उसी प्रदेश में मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के लिए स्थापित संस्था उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान बसपा और भाजपा के राज्य में निष्प्राण होता जा रहा है। अम्बेडकर को मसीहा मानने वाली मुख्यमंत्री हिन्दी संस्थान की पदेन अध्यक्ष हैं।

28 जुलाई 2003 से संस्थान सामान्य सभा और कार्यकारिणी से भी वंचित है। कार्यकारी अध्यक्ष का पद भी रिक्त है। निदेशक भी नहीं हैं, संस्कृत संस्थान के निदेशक कभी आ जाते हैं।

वर्ष 2002 के संस्थान के भारत भारती, लोहिया, जैसे विशिष्ट सम्मान घोषित तो हो गये किन्तु कब दिये जायँगे, इसकी कोई सूचना नहीं है। वर्ष 2003 के पुरस्कारों की अभी कोई चर्चा भी नहीं है।

संस्थान की पुरस्कार योजना के अन्तर्गत साहित्य की 34 विधाओं/विषयों पर वर्ष 2000 में प्रकाशित हिन्दी की मौलिक पुस्तकें पुरस्कार हेतु आमंत्रित की गई हैं। वर्ष 2001, 2002 की पुस्तकें कब माँगी जायगी, कब उन पर पुरस्कार घोषित होंगे, इसकी तो चर्चा करना ही व्यर्थ है।

दूसरी ओर साहित्यकारों का बालीवुड दिल्ली को देखिए—हिन्दी अकादमी 2002-2003 के ही नहीं 2003-2004 के भी सम्मान पुरस्कार 6 सितम्बर 2003 को ही दे दिए गये। हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने 1999-2000 में 183.88 लाख रुपये खर्च किये। अकादमी की गतिविधियों के विस्तार के कारण यह राशि 255 लाख रुपये हो गई।

हिन्दी का हृदय प्रदेश दिन पर दिन निष्क्रिय होता जा रहा है। साहित्य गंगा की धारा सूखती जा रही है। यह है राजनीति की माया।

भारतीय अनुवाद परिषद पुरस्कार

वर्ष 2003-2004 के नातालि पुरस्कार, डॉ० गार्गी गुप्त द्विवागीश पुरस्कार तथा डॉ० गार्गी गुप्त अनुवाद श्री सम्मान के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। पुरस्कार स्वरूप 11,000 रुपये, एक शाल, प्रतीक चिह्न, प्रमाण-पत्र एवं पुष्प गुच्छ भेंट किये जायँगे। पता—24, स्कूल लेन, (बेसमेंट) बंगाली मार्केट नई दिल्ली-110 001

आजकल का समाज साहित्यकार को नहीं, चार तरह के लोगों को सम्मान देता है—साधु, नेता, क्रिकेटर और अभिनेता। **—विष्णु प्रभाकर**

कथन

प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' को पाठ्यक्रम से हटाकर सी०बी०एस०सी० ने कोई गलती नहीं की थी, क्योंकि यह उपन्यास इण्टरमीडिएट के विद्यार्थियों के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है। पाठ्यक्रम में बदलाव आज की जरूरत है, जिसे सभी को स्वीकार करना चाहिए।

इण्टरमीडिएट के विद्यार्थियों को उनकी अवस्था के हिसाब से उत्साह एवं उमंग भरी रचनाएँ देनी चाहिए न कि ऐसी रचनाएँ जो उनके मन में अवसाद डालने का काम करें।

पाठ्यक्रमों में परिवर्तन आज की आवश्यकता है, जिसे सभी को स्वीकार करना चाहिए। यह कदम किसी भी रचनाकार को अपमानित करने के लिए नहीं है बल्कि विद्यार्थियों को साहित्य में रचित अच्छी-अच्छी रचनाओं से परिचित कराना है। **—विद्यानिवास मिश्र**

मुंशी प्रेमचंद ने न सिर्फ समाज के यथार्थ को अपने साहित्य में चित्रित किया वरन् एक बेहतर समाज का आदर्श प्रस्तुत किया। इसी कारण उनका साहित्य आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का साहित्य है। उन्होंने कहा कि साहित्य राजनीतिक दलों के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे चलने वाली मशाल है। **— आचार्य विष्णुकांत शास्त्री**
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

संसद में प्रेमचंद

प्रेमचंद पर चर्चा संसद में होनी चाहिए। इतने महत्त्वपूर्ण विषय को संसद में उठाना किसी भी सांसद को महत्त्वपूर्ण नहीं लग रहा है। प्रेमचंद ने दलितों/महिलाओं को उनकी वस्तुस्थिति से परिचित कराया एवं उस स्थिति से उबरने का प्रकाश भी अपने साहित्य के माध्यम से दिखाया। उनका उद्देश्य उपेक्षितों का हिमायती बनना न था, अपितु इस वर्ग का उत्थान ही उनका एकमात्र उद्देश्य था। इसके विपरीत इन तथाकथित उपेक्षित वर्ग के नेतागण मात्र इनके हिमायती बनने का स्वांग करते हैं और अपना व्यक्तिगत जीवन राजसी ठाठ-बाट का रखते हैं।

— दिग्विजय सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय

साहित्य राजनीति का शस्त्र

राजनीतिक प्रतिद्वंदिता के इस युग में साहित्य का इस्तेमाल राजनीतिक शस्त्र के रूप में किया जा रहा है। प्रेमचंद के उपन्यास निर्मला को सी०बी०एस०ई० के पाठ्यक्रम से हटाने को लेकर आन्दोलन, प्रदर्शन, धरना क्या नहीं हुआ। क्या प्रेमचंदजी इसे पसन्द करते। यह कहना उचित हो सकता है कि मृदुला सिन्हा की पुस्तक पाठ्यक्रम में न रखी जाय। पर प्रेमचंदजी की निर्मला ही रहे, ऐसा क्यों। 1920 में लिखे गये उपन्यास में जिस समस्या को, रेखांकित किया गया है, आज उससे भिन्न है। कितने ही अन्य साहित्यकारों की कृतियाँ आज के जीवन को संदर्भित करती हैं, क्या उन पर विचार नहीं करना चाहिए। क्या आज के साहित्यकारों को प्रेमचंद के सामने खारिज कर देना चाहिए। यशपाल, अमृतलाल नागर, भीष्म साहनी, विष्णु प्रभाकर, भगवतीचरण वर्मा, कमलेश्वर, फणीश्वर नाथ रेणु, निर्मल वर्मा, शिवप्रसाद सिंह प्रभृति को सर्वथा भुला देना चाहिए। आज के संदर्भ किशोरों को अधिक प्रेरित करेंगे।

राजस्थान में प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' को कक्षा 6 की पाठ्य पुस्तक से हटा दी गई, उसको लेकर भी आपत्ति की गई। पुन: कक्षा 5 की पुस्तक में उसे सम्मिलित किया गया। किन्तु माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, सुमित्रानंदन पंत की कविताएँ पाठ्यक्रम में शामिल न किये जाने पर किसी ने आपत्ति नहीं की। जयशंकरप्रसाद तो आज पाठ्य पुस्तकों से खारिज कर दिये गये हैं। प्रसाद का नाटक 'स्कंदगुप्त' आज कश्मीर की समस्या को लेकर कितना प्रासंगिक है, उसकी चर्चा कोई नहीं करता।

निवेदन है साहित्य को साहित्य रहने दें, उसकी गरिमा बनी रहने दें। उसे राजनीति का हथियार न बनायें। **—सम्पादक**

विचौलियों की मुनाफा खोरी के चलते आज हिन्दी का प्रबुद्ध पाठक अच्छी साहित्यिक रचनाओं का लाभ नहीं उठा पा रहा है। यह बात चिन्तनीय एवं चिन्तन योग्य है।

साहित्य उपक्रम का मूल उद्देश्य साहित्य के प्रसार पर गहन चिन्तन, साहित्यकारों की समाज के विभिन्न कार्यों से साहित्य के सन्दर्भ में बातचीत, पुस्तक क्लबों के माध्यम से स्कूली बच्चों में साहित्यिक अभिरूचि पैदा करना तथा कम मूल्य पर उच्चकोटि की पुस्तकों पाठकों तक पहुँचाना है।

प्रकाशकों तथा बिचौलियों के शोषण एवं मुनाफाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण ही हिन्दी साहित्य अपने पाठकों की पकड़ से दूर होता जा रहा है।

देश का सर्वाधिक बड़ा भाग हिन्दी भाषा भाषी है किन्तु साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में हिन्दी का स्थान मलयालम, बंगला, मराठी तथा तमिल से कहीं पीछे है। पुस्तकों के मूल्य पाठकों की पकड़ से बाहर होने के कारण ही आज हिन्दी साहित्य के समक्ष प्रसार का संकट उत्पन्न हुआ है। पाठकों में जागरूकता पैदा करने के लिए पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित करनी चाहिए।

रचनाकारों को ऐसे बिन्दुओं को स्पर्श करना चाहिए जो अब तक साहित्य में अछूते रहे हैं। आज का युग 'अप्लायड लिर्टेचर' का युग है। साहित्य हासिये पर खड़ा है और घटिया रचनाएँ उसका स्थान ले रही हैं। **— विकासनारायण,** आई०पी०एस०
अध्यक्ष, साहित्य उपक्रम

पहले लेखकों का लक्ष्य पाठक होते थे। वे अपनी पुस्तक अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचाना चाहते थे, जो दूर-देहात में रहते थे। उनकी पुस्तक की सफलता उन पाठकों की ग्राहकता पर निर्भर करती थी, जिसमें थोड़ा वक्त लगना स्वाभाविक होता था। अब पुस्तक का साधारण पाठक आँखों से लुप्त हो चुका है और उसकी जगह बड़े लेखकों, सम्पादकों, विभिन्न संस्थाओं के अधिकारियों और मीडियावालों ने ले ली है। यह 'ग्लैमर' का जमाना है, जिसमें पुस्तक के अंतर्य को नहीं, उसके बाहरी रूप-रंग को देखा जाता है।

— विवेकी सिंह

आज सबसे बड़ी विकृति राजनीति की है। पूरी व्यवस्था में एक गहरा अविश्वास पनप गया है और सारी जिम्मेदारी सरकार पर छोड़ दी गयी है। लेकिन शब्द की सत्ता बड़ी होती है और आज एक ऐसी मुहिम की जरूरत है जो इस सत्ता को बचा सके।

— डॉ० गंगाप्रसाद विमल
पूर्व निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

आज प्रकाशक पुस्तकें बेचने के लिए किसी भी हद तक कमीशन देने को तैयार हैं। पहले 30-32 प्रतिशत ही दिया जाता था लेकिन अब तो प्रकाशक न केवल पचास प्रतिशत तक कमीशन देते हैं बल्कि सरकारी अधिकारियों को भी अनाप-शनाप घूस देते हैं। इसका प्रभाव लेखकों की रायल्टी पर पड़ता है। लेखकों को रायल्टी समय से नहीं मिलती। मेरे समय में ऐसा नहीं था। **प्रकाशन मात्र उद्योग नहीं था, बल्कि एक मिशन भी था। मूल्यों को बचाते हुए इस उद्योग को बचाना अब कठिन हो गया है। — शीला संधू**
पूर्व अध्यक्ष, राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०, दिल्ली

डाक द्वारा पुस्तकें भेजने पर डाक खर्च अधिक होने के कारण अच्छी पुस्तकें दूर दराज के इलाकों में नहीं पहुँच पातीं। पुस्तकों के भेजने पर लगने वाले भारी डाक खर्च में रियायत देने के लिए प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी और उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के समक्ष यह मामला उठाया जायगा।

विश्व में पुस्तक प्रकाशन के मामले में देश का छठा स्थान है। यहाँ हर वर्ष 24 भाषाओं में 70 हजार पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। अंग्रेजी भाषा में पुस्तक के प्रकाशन के मामले में अमेरिका और ब्रिटेन के बाद भारत का तीसरा स्थान है। हमारे प्रकाशकों के समक्ष पुस्तकों का वितरण एक विकट समस्या है।

— दीनानाथ मलहोत्रा, अध्यक्ष
फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स, दिल्ली

महतारी भाषा

हम तोहके का बोली।
बोली बोली
भाषा बोली
अवधी कि भोजपुरी
हम तोहके का बोली॥
सरनामी कि सरनामी हिन्दी
हिन्दुस्तानी कि सरनामी हिन्दुस्तानी
हम तोहके का बोली।
मानक हिन्दी कि खड़ी बोली
टूटल भाषा कि अइली गइली
हम तोहके का बोली।
आपन भाषा में एक बात बोली
तोहसे हम्में बहुत है प्यार
महतारी भाषा हमार॥

— हरिदेव सहतू, सूरीनाम

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' के जनवरी व जुलाई के अंक प्राप्त हुए, दोनों ही अंक काफी सूचनाएँ एवं नयी जानकारी से भरे हैं। इतनी जानकारी एक स्थान पर अन्य प्रकाशन-गृहों से प्रकाशित किसी भी पत्रिका में नहीं मिल पाती, इसके लिए हार्दिक बधाई।

आपने जुलाई 2003 के अंक में जो सम्पादकीय लिखा है वह सच्चाई से भरपूर है परन्तु आजकल प्रकाशक अपने व्यापार की ही चिन्ता करते हैं, आगे की स्थिति पर विचार नहीं करते, जो सोचनीय विषय है। किसी भी प्रकाशक में यह बात कहने और लिखने का साहस नहीं होता, आपने अपने अग्रलेख में सभी बातें लिखकर समाज व साहित्यप्रेमियों के सामने आज की पुस्तक खरीद की स्थिति सम्बन्धी अनेक बातें पूर्णरूपेण स्पष्ट रूप से खोल के रख दी हैं, इसके लिए मैं आपको हार्दिक बधाई भेज रहा हूँ। यदि हिन्दी प्रकाशन उद्योग को जीवित रहना है तो सरकारी खरीदों पर नहीं बल्कि पाठकों की नब्ज व उनकी रुचि को जानकर उसके अनुरूप प्रकाशन करना होगा। अभी भी पाठक हैं, पाठक पुस्तकें खोजते रहते हैं परन्तु उनकी रुचि के अनुसार हिन्दी भाषा में पुस्तकें नहीं मिल पातीं। हिन्दी की पुस्तकों की दुकानें प्राय: समाप्त हो गई हैं। हिन्दी के प्रकाशकों को आने वाले समय में पाठकों के लिए पेपरबैक पुस्तकें कम दामों में छापनी पड़ेंगी, मेरी ऐसी मान्यता और धारणा है। सरकारी खरीदों में तो पुस्तकें एक गोदाम से दूसरे (सरकारी) गोदामों में जाकर पड़ जाती हैं। वे पुस्तकें पाठकों तक सालों साल नहीं पहुँच पाती। इससे सबसे ज्यादा अहित लेखकों का हो रहा है, जो पाठकों तक नहीं पहुँच पाते।

आपसे अनुरोध है कि आप अपनी पत्रिका में समय-समय पर हिन्दी प्रकाशन उद्योग की समस्याओं को उजागर करें, चाहे वे पुस्तकों से सम्बन्धित हों, चाहे पुस्तक खरीदों से या डाकखानों में बढ़ती धाँधली से। आजकल पुस्तकें भेजने में डाक खर्च बहुत बढ़ गया है जिससे पुस्तकों की बिक्री पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। **— सुखपाल गुप्त**
आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' के जुलाई-2003 की प्रति प्राप्त हुई। इसमें जो संस्मरण आपने स्वर्गीया शिवानीजी के दिये हैं, वे आत्मीय के साथ-साथ अनुप्रेरक भी हैं। इसमें जो शिकायत साहित्यिक मान्यता के अभाव की है, वह बहुत ही विचारणीय है। परन्तु कौन इस प्रकार के प्रश्नों पर विचार करता है। विचार होता तो ऐसा व्यवहार ही नहीं होता। आपने बहुत ही ज्वलन्त शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की है।

प्रथम पृष्ठ पर दिल्ली के सम्बन्ध में जो प्रश्न उठाये हैं, उनका संत्रास बहुत दिन से भोगा जा रहा है, परन्तु किसी के किये कुछ हो नहीं रहा और दिल्ली के जो दोष हैं वे सब बढ़ते जा रहे हैं।

मेरे मन में बहुत रहा है कि काशी-प्रयाग जैसे हिन्दी केन्द्रों ने क्यों दिल्ली से प्रतिस्पर्धा में अपने को परास्त होने दिया। हिन्दी प्रकाशकों के संगठन की सशक्तता और अभियोजना की इस समय बहुत आवश्यकता है। इससे उलटा स्वरूप प्रकाशकों के संगठन ने अपना बना लिया है, और कोई कुछ कर नहीं पा रहा। यह स्थिति पराजय होती है, क्या इसको परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। हिन्दी को समर्थ करने की इच्छा दिल्ली में नहीं बची है। ऐसे में जो सार्थक कार्ययोजना बनायेंगे सभी के सहयोग के अधिकारी रहेंगे। इस चिन्तन क्रम को हर प्रयत्न से आगे बढ़ाया जाना चाहिये, और उसके अनुरूप सक्रियता भी निर्मित की जानी चाहिये। हिन्दी की दुर्दशा का एक कारण यह भी है कि सब हिन्दी वाले दूसरों पर निर्भर हो गये हैं। हिन्दी पर इस समय जो संकट है, उनके प्रतिकारक का कहीं किसी की ओर से प्रयत्न नहीं हो रहा है। यह दु:खद स्थिति है।

— राजेन्द्रशंकर भट्ट
साहित्यवाचस्पति एवं भूतपूर्व अध्यक्ष
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
जयपुर

'भारतीय वाङ्मय' जुलाई 2003 देखा। सम्पादकीय सहित समस्त विवरण तथ्य संक्षिप्त/सार्थक/सोद्देश्य है। चयन प्रक्रिया सचमुच शानदार है।

— मोतीलाल जैन 'विजय', कटनी

'भारतीय वाङ्मय' जैसी साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका निकालना अत्यन्त स्वागत योग्य प्रयास है। कृपया मेरी हार्दिक बधाई स्वीकारें। लघु पत्रिका दुर्लभ समाचारों से भरपूर होने के कारण संग्रहणीय है। प्रकाशन जगत की तहें उधेड़ता सम्पादक का 'साहित्यकारों का बालीवुड' शीर्षक से मुखपृष्ठ पर छपा लेख दिमाग को झकझोरने वाला है। प्रभाकर श्रोत्रिय की टिप्पणी मर्मस्पर्शी है।

— डॉ० श्यामपलट पाण्डेय
आयकर आयुक्त, मुम्बई

'भारतीय वाङ्मय' जुलाई अंक के प्रथम पृष्ठ पर आपकी तथा श्रोत्रियजी की टिप्पणी से मैं सहमत हूँ। **— दयानन्द वर्मा**, पूर्व अध्यक्ष
अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ

'भारतीय वाङ्मय' का जुलाई 2003 का अंक मिला। 'दिल्ली की मजबूरियाँ' और 'साहित्यकारों का बालीवुड दिल्ली' पढ़कर मुझे अपने एक मित्र की पंक्तियाँ याद आ गईं—

रंग बिरंगे साँप हमारी दिल्ली में।
क्या कर लेंगे आप हमारी दिल्ली में॥

— डॉ० अर्जुन तिवारी
पूर्व अध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ

'भारतीय वाङ्मय' में आपका अग्रलेख 'साहित्यकारों का बालीवुड दिल्ली' रोचक और रंजक तो है ही, प्रहारक भी है।

— विद्यावाचस्पति डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव
पटना

'भारतीय वाङ्मय' का जुलाई 2003 अंक कर्म दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। दिल्ली के बारे में व्यक्त आपके बेबाक विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुआ। दिल्ली ने न सिर्फ राजनीति वरन् साहित्य की जो क्षति की है उसे सारा देश कभी नहीं भूलेगा। दिल्ली की मजबूरियाँ शीर्षक से आदरणीय प्रभाकर श्रोत्रिय के विचार भी युक्ति संगत है। **— अनिरुद्धप्रसाद विमल**
सम्पादक 'समय'
बाँका (बिहार)

'साहित्यकारों का बालीवुड दिल्ली' सम्पादकीय में आज के साहित्य एवं प्रकाशन-जगत् का सच्चा चित्र प्रस्तुत किया है। हम इस वास्तविकता से सबक लेकर कुछ उबर सकें।

— सत्यनारायण मिश्र
सम्पादक 'जीवन प्रभात', मुम्बई

'भारतीय वाङ्मय' सूचनाधर्मी एक उच्चस्तरीय पत्र है। इसकी उपयोगिता निस्संदिग्ध है। प्रधान सम्पादक द्वारा लिखा सम्पादकीय 'समाचार पत्रों का दायित्व' में सम्पादक महोदय का दर्द केवल सम्पादक महोदय का दर्द नहीं है। **— स्वर्णकिरण**, सम्पादक
'नालन्दा दर्पण', नालन्दा

'भारतीय वाङ्मय' जुलाई 2003 के अंक में 'साहित्यकारों का बालीवुड दिल्ली' के माध्यम से आपने हिन्दी साहित्य जगत की वास्तविकता को सामने रखते हुए विचारमंथन का जो विषय दिया है वह निश्चित रूप से महत्त्वपूर्ण है।

— डॉ० सुश्री शरद सिंह
सागर

'भारतीय वाङ्मय' वस्तुत: आपके सामयिक एवं प्रासंगिक सम्पादकीयों के कारण पाठकों को प्रबुद्ध तो करते ही हैं, उन्हें देश की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के मूल में प्रवहमान मूल्यों (या उनके विघटन) के प्रति चिंतित भी करती है।

— कान्तिकुमार जैन, सागर

भारतीय वाङ्मय में पुस्तक परिचय तथा समीक्षा

हमारा उद्देश्य 'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से केवल अपने प्रकाशनों का प्रचार-प्रसार नहीं है, वरन् भारतीय साहित्य जगत विशेषकर हिन्दी क्षेत्र की गतिविधि तथा प्रमुख प्रकाशनों से पाठकों को परिचित कराना है। इसी उद्देश्य से 'भारतीय वाङ्मय' अपने पृष्ठों में वृद्धि कर कतिपय नई पुस्तकों की समीक्षा अथवा परिचय प्रकाशित करेगा। नई पुस्तकों के प्रकाशन की सूचना भी देगा। प्रकाशकों को समीक्षा के लिए अपनी एक-दो प्रमुख कृति भेजनी चाहिए। **—सम्पादक**

अध्यात्मपरक ग्रन्थ

मनीषी, संत, महात्मा

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150.00
नीब करौरी के बाबा *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 12.00
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० गिरिराज शाह* 150.00
सोमबारी महाराज *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50.00
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy *N.L. Gupta* 400.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 250.00
पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120.00
Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400.00
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150.00
करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00
महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00
भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
भारत के महान योगी (भाग 1-10) 5 जिल्द में *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)* 100.00
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120.00
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 100.00
महात्मा बनादास : जीवन ओर साहित्य *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 60.00
पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 70.00

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

गङ्गा : पावन गङ्गा *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00
कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50.00
पूर्ण कामयोग (कामना-सिद्धि और ध्यान के रहस्य) *गुरुश्री वेदप्रकाश* 120.00
उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली, अनु० केशवप्रसाद कार्याँ* 150.00
सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60.00
सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा* 65.00
वाग्विभव *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 200.00
मारणपात्र *अरुणकुमार शर्मा* 250.00
वह रहस्यमय कापालिक मठ *''* 180.00
मृतात्माओं से सम्पर्क *अरुणकुमार शर्मा* 200.00
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी *''* 180.00
तीसरा नेत्र (प्रथम खण्ड) *''* 250.00
तीसरा नेत्र (द्वितीय खण्ड) *''* 300.00
मरणोत्तर जीवन का रहस्य *''* 300.00
परलोक विज्ञान *''* 300.00
कुण्डलिनी शक्ति *''* 250.00
भौतिक सत्ता में प्रवेश 200.00
बृहत श्लोक संग्रह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 200.00
स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *डॉ० भवानीलाल भारतीय* 120.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00
धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुन्धरा मिश्र* 250.00
सोमतत्त्व *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100.00
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन *शारदाप्रसाद सिंह* 40.00
जपसूत्रम (प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती (प्रत्येक)* 150.00
वेद व विज्ञान *''* 180.00
रावण की सत्यकथा *रामनगीना सिंह* 60.00
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता) *हरीन्द्र दवे* 80.00
कृष्ण का जीवन संगीत *डॉ० गुणवंत शाह* 300.00
हिन्दी ज्ञानेश्वरी *अनु० ना० वि० सप्रे* 180.00
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डों में) *श्री श्यामाचरण लाहिड़ी* 375.00
पूर्ण कामयोग *गुरुश्री वेदप्रकाश* 120.00
कथा राम कै गूढ़ (तुलसी) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 125.00
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर) *सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 150.00
कृष्णायन *रामबदन राय* 200.00
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 100.00
अनंत की ओर *अशोककुमार* 90.00
रामायण-मीमांसा *करपात्रीजी महाराज* 250.00
भक्ति-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 190.00
श्रीभागवत-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 70.00
श्रीराधा-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 50.00
भ्रमर-गीत *करपात्रीजी महाराज* 90.00
गोपी-गीत *करपात्रीजी महाराज* 200.00

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के प्रमुख ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना 80.00
क्रम-साधना 80.00
अखण्ड महायोग 80.00
श्रीकृष्ण प्रसंग 250.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा 130.00
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100.00
श्री साधना 50.00
दीक्षा 80.00
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2) 80.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन) 300.00
कविराज प्रतिभा 64.00
ज्ञानगंज 60.00
प्रज्ञान तथा क्रमपथ 80.00
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना 50.00
परातंत्र साधना पथ 40.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1) 200.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2) 120.00
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 40.00
काशी की सारस्वत साधना 35.00
भारतीय साधना की धारा 30.00

योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व

सुखी जीवन : कैसे ? *डॉ० एल०पी० पाण्डेय* 90.00
योग साधना (80 चित्रों सहित) *दुर्गाशंकर अवस्थी* 120.00
योग के विविध आयाम *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00
दीर्घायु के रहस्य *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 50.00
अपने व्यक्तित्व को पहचानिए *डॉ० सत्येन्द्रनाथ राय* 50.00
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250.00

संत महात्मा : जीवनचरित

विवेकानन्द : रोमां रोलां 80.00
रामकृष्ण परमहंस : रोमां रोलां 125.00
महात्मा गाँधी : रोमां रोलां 120.00
चैतन्य महाप्रभु *अमृतलाल नागर* 90.00
आदि शंकराचार्य *डॉ० जयराम मिश्र* 80.00
उत्तर योगी : (श्री अरविन्द : जीवन और दर्शन) *शिवप्रसाद सिंह* 200.00
भगवान् बुद्ध *धर्मानन्द कोसम्बी* 160.00
गुरु नानकदेव *डॉ० जयराम मिश्र* 125.00
मानवपुत्र ईसा *डॉ० रघुवंश* 160.00
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम *डॉ० जयराम मिश्र* 100.00
रामभक्त शक्तिपुंज हनुमान *''* 50.00
लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण *''* 90.00
महर्षि दयानन्द *यदुवंश सहाय* 150.00
स्वामी राम *डॉ० र०श० केलकर* 120.00
स्वामी रामतीर्थ *डॉ० जयराम मिश्र* 200.00
शिरडी साईं बाबा (दिव्य महिमा) *डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त* 60.00
सत्य साईं बाबा (जीवन और संदेश) *डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त* 65.00
पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) : (जीवन और मिशन) *डॉ० इकबाल अहमद* 75.00
संत रैदास *डॉ० योगेन्द्र सिंह* 125.00
डॉ० भीमराव अम्बेदकर : (व्यक्तित्व के कुछ पहलू) *मोहन सिंह* 100.00

राजा राममोहन राय *डॉ० के०सी० दत्त* 150.00
लोकनायक समर्थगुरु रामदास
डॉ० सच्चिदानन्द परलीकर 175.00

इतिहास, संस्कृति और कला

Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Verma* 300.00
Benaras : The Sacred City *E.B. Havell* 150.00
Prinsep's Benares Illustrated *James Prinsep*
Int. by Dr. O.P. Kejariwal 800.00
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200.00
Life in Ancient India
Dr. Mahendra Pratap Singh 100.00
The Imperial Guptas Vol. I-II
Dr. P.L. Gupta (Each) 200.00
प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति
प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर 250.00
भारतीय मुसलमान *डॉ० किशोरीशरण लाल* 80.00
महाभारत का काल निर्णय *डॉ० मोहन गुप्त* 200.00
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा
डॉ० लल्लनजी गोपाल 150.00
प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक
डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव 200.00
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ
डॉ० श्रीराम गोयल 50.00
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ ,, 120.00
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन)
प्रो० ए०के० नारायण 300.00
प्राचीन भारत *डॉ० राजबली पाण्डेय* 150.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-1 : मौर्य-काल से कुषाण(गुप्त-पूर्व)
काल तक) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-2 : गुप्त-काल 319-
543 ई०) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 80.00
गुप्त साम्राज्य *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 200.00
भारतीय वास्तुकला *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के ,, 170.00
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ ,, 45.00
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ
(600 से 1200 ई.) *डॉ० ओंकारनाथ सिंह* 70.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 450.00
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु ,, 200.00
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा ,, 120.00
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला
डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी, डॉ० कमल गिरि 150.00
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण ,, 325.00
भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क
डॉ० आर० गणेशन 250.00
इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्ड चौबे* 150.00
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन
डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव 80.00
दिल्ली के सुलतानों की धार्मिक नीति
(1206-1526 ई.) *डॉ० निर्मला गुप्ता* 80.00
सल्तनतकालीन सरकार तथा
प्रशासनिक व्यवस्था *डॉ० उषारानी बंसल* 50.00
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00
काशी की पाण्डित्य परम्परा
पं० बलदेव उपाध्याय 600.00
काशी के घाट : कलात्मक एवं
सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ० हरिशंकर* 300.00

पठनीय पुस्तकें

अमर बलिदान
माराज राजपाल के बलिदान की कहानी
सम्पादक : श्री विश्वनाथ

महादेव गोविन्द रानाडे
श्री ना०वि० सप्रे
डॉ० शैलेन्द्रप्रसाद पांथरी
मिश्रा ट्रेडिंग कारपोरेशन, वाराणसी

जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'
स्मृति तर्पण
सम्पादक : प्रो० कैलानाथ तिवारी
पूर्णिया (बिहार)

अभिनव प्रसंगवश
सम्पादक : डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ
ज्ञानसरोवर, वाराणसी

संगम का साहित्यिक सिद्ध
लेखक : डॉ० विवेकी राय
स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मृति केन्द्र
गाजीपुर

भारतीय वाङ्मय
मासिक

वर्ष : 4 **सितम्बर 2003** **अंक : 9**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: Offi. : (0542) 2421472, 2353741, 2353082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2353082